Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

36

सुधा बिंदु त्रिपाठी के आदर्श विवेचन

राणा प्रताप भारती
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

डॉ. नित्यानंद श्रीवास्तव
शोध निर्देशक , सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर

पत्र-आज मानव समाज वैज्ञानिक एवं तकनीकी में इतना आगे चला गया है कि पत्र एक बेजान व सपने जैसा लगता एक समय था जब भारत अंग्रेजों के जंजीरों से गिरा हुआ था तब स्वतंत्रता (आजादी)दिलाने में पत्र -पत्रिकाओं का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है छोटे-छोटे प्रेसो के माध्यम से जगह-जगह तथा चुपके-चुपके लोगों के पास पहुंच जाता जिससे हम भारतीय लोगों में (जनता)में एकता व अखंडता का विशाल उदाहरण है इससे यह आम जनमानस को पता चलता था की कौन क्रांतिकारी कहां कैसे लड़ाई लड़ रहा है आगे क्या करना है जिससे सभी नागरिक हिंदू -मुस्लिम मिलकर देश में अहम भूमिका निभाते थे पत्र उस समय का सबसे सरल मार्ग था इसके मध्य हम अपने विचारों को आसानी से आदान-प्रदान करते थे सुधा बिंदु त्रिपाठी के मन मस्तिष्क में महात्मा गांधी एवं बाबा राघव दास-त्रिपाठी जी धानी बाजार में शिक्षा ग्रहण करते समय महात्मा गांधी जी से इतना प्रभावित हुए थे कि अपने मित्र श्री गौरी राम गुप्त श्री भगवान नाथ भार्गव श्री रघुवर यादव एवं अन्य सहयोगियों के साथ महात्मा गांधी के नमक आंदोलन से पूर्व ही नमक बनाया था| यही से इनके विचार क्रांतिकारी हो गए थे ,स्कूल के बाद जब भी इनको समय मिलता वह गांधी व बाबा राघव दास के विचारों बताने के लिए वह पर्चा लेकर गांव-गांव प्रचार करने निकल जाते थे,एक बार स्कूल के तरफ से आयोजन किया गया जिसमें सभी बच्चों ने भाग लिया राष्ट्रभक्ति एवं गांधी के कार्यक्रमों की सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत किया जिससे यह बहुत गौर्वान्वित (प्रभावित) हुए,इस समय इनके पिता मास्टर बनना चाहते थे, पर इन्हें गांधी जी के आंदोलन और खुद स्वतंत्र कराने के लिए सोच लिए और पिता द्वारा दी गई वह सारी अर्जित की गई उपाधियां राप्ति मैया की गोद में अर्पित कर दिया और देश-दुनिया की चर्चा होती और गांव जवार प्रांत -देश की समस्याएं ज्वलंत आकर जहां ठहर जाती वहीं से प्रतिदिन प्रातः कंधे में झोला लटकाए लाठी में कांग्रेस का झंडा लिए नंगे पर घूमते और गांव के लोगों को गांधी जी को संदेश सुनते।

बाबा राघव दास — यह एक महान संत व स्वतंत्रता सेनानी समाज सुधारक और पूर्वांचल के गांधी के रूप में प्रसिद्ध थे जिनका जन्म पुणे में हुआ था ,यह अपना पूरा जीवन पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेषकर देवरिया के बरहज को अपना साधना स्थल बनकर लोक सेवा शिक्षा स्वतंत्रता संग्राम में समर्पित कर दिया जो गांधी जी के समकालीन और गरीबी थे देश की आजादी के लिए गांधी जी के साथ मिलकर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते समय कई बार जेल भी जा चुके थे जब कोई आंदोलन का रूपरेखा तैयार होता तो उसे बाबा राघव दास गोरखपुर के क्रांतिकारियों के लिए चिट्ठी छोड़ जाते थे उसे लेकर सुधा बिंदु त्रिपाठी जी घूम घूम कर गांव शहर में पैदल चलकर यह संदेश सुनते थे जहां रात होती वहीं ठहर जाते फिर सुबह उठकर संदेश सुनाने निकल जाते, सुधाबिंदु को यह महान क्रांतिकारी(गांधी ज़ी,बाबा राघव दास) दोनों आंदोलनकारी की वजह से यह उनके मन में बड़ा परिवर्तन हुआ,यह अपना घर-बार त्याग कर देश सेवा में लग गए इन्हें भी कई बार जेल जाना पड़ा था,

भूमिका – अपने जीवन के विविध संदर्भ में गांधी जी और बाबा राघव दास के चित्रण पर प्रकाश डाला है इन्होंने स्त्री सम्मान इनके लिए सर्वोपरि रहे हैं स्त्री संबंध में लिबर्टी होटल में नई यूतियों का होना उनके साथ दुर्व्यवहार से लेखक बहुत आहत हुए थे कहा क्या हम और साथी सब अन्य क्रांतिकारी इसीलिए आजादी दिलाई कि भारत की महिलाएं को यह दिन देखना पड़े सामाजिक प्रवेश इतना कमजोर हो गया है कि मैं कल्पना भी नहीं कर सकता यह निश्चित थी पुरुष की मानसिकता दूषित है जो इस तरह से कार्य कर रहे हैं अपनी मंजन मनु नयन हेतु अपने ही घर को नीलम कर रहे हैं (**महादेव वर्मा –श्रृंखला की कनिया में नारी जीवन की गंभीर प्रश्नों पर विमर्श किया पृ.सं. 64)**

मंन्नू भंडारी – आपका बंटी जैसी बने सो और नाटकों में स्त्री का चित्रण का स्थिति का चित्रण आपका बंटी क्या कर दिया लिए देखिए (**पृष्ठ संख्या 36)**

जंजीर गुलामी का –आजादी से पहले भारत में अनेक पीड़ाओं को झेला था,जिसकी एक दवा भी एकता अखंडता के माध्यम से आजादी के लिए जो महात्मा गांधी ने यह क़दम उठाई जिसके पीछे सारा जहां मालूम चल पड़ा था इन्होंने जब-जब आंदोलन किया लोगों ने खूब बढ़-चढकर हिस्सा लिया चाहे वह बच्चा, महिला ,बुजुर्ग ,दलित आदि सभी ने मिलकर उनके संघर्ष में साथ दिया जो आज इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों अमिट रूप दिखाई देता है, जिसमें प्रमुख आंदोलन नमक आंदोलन 12 मार्च 1930 में हुआ, चंपारण सत्याग्रह 1917 में अहमदाबाद मिल मजदूर का आंदोलन 1918 खेड़ा आंदोलन उच्च भूमि राजस्व कर यह महात्मा गांधी का पहला किसान आंदोलन था|खिलाफत आंदोलन 1919 –1922 असहयोग आंदोलन 1920 - 22 जलियांवाला बाग हत्याकांड व रालेट एक्ट जैसे दमनकारी कानून का विरोध करना था बाद में इसे वापस ले लिया गया था

महात्मा गांधी का सामाजिक पीड़ा—महात्मा गांधी की कोई अपनी पीड़ा न थी वह पूरे भारतीय समाज को अपना परिवार मानते थे,प्रत्येक नागरिक का पीड़ा अपना पीड़ा समझते थे उनकी देशभक्ति का कोई सीमा नहीं था, अंग्रेजो द्वारा की जा रही क्रूर अत्याचार से देश में हो रही

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

घटनाओं से वह व्यथित थे वह इस प्रयासरत में थे कि अंग्रेजों को जल्द से जल्द देश से बाहर कर दिया जाए और अपने भारतीय समाज को खुली हवा में सांस दिला सके अपने हक अधिकार,पा सकें, इसके लिए गांधी जी ने करो या मरो का नारा तक दे दिए थे

जाति व्यवस्था - पहले से चली आ रही जाति व्यवस्था भी एक बड़ा गुलामी का प्रमुख कारण रहा है इसे तोड़ने के लिए बड़े जाति एवं छोटे-छोटे जातियों में बटे लोगों को एक साथ आने के लिए प्रेरित किया यह सब उनके पीड़ाओं के अंग रहे हैं सुधा बिंदु त्रिपाठी भी छुआछूत गरीबी अमीरी के खिलाफ रहे हैं जो उनके विचार महात्मा गांधी की विचारों पर आधारित है,

गरीबी – सोने की चिड़ियां कहें जाना वाला भारत लगभग 200 सालों तक अंग्रेजों का गुलाम बना रहा, गरीबी एक बहुत बड़ा कारण बना रहा, गरीबी से लोग अंग्रेजी की चापलूसी करते थे बदले में उन्हें बड़ी इमारत या जमीदार बना देना उनकी नीति में शामिल हो गई गोरो ने भारत में फूड डालो राज करो की नीति रही जिससे महात्मा गांधी बहुत दुखी हुए फिर इन्होंने स्वरोजगार के लिए अनेक कार्य किया जिसमें हथकरघा रोजगार था स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग आदि कार्य किये,जिसको आगे बढ़ाने में सुधा बिंदु त्रिपाठी व अन्य सहपाठियों व सहयोग किया,

नैतिक मूल्यों का पतन — निश्चित रूप से जो कोई व्यक्ति, देश समाज, गुलामी की जंजीरों में जकड़ा होंता उनके नैतिक मूल्यों का हनन होना स्वाभाविक है ।शोषक वर्ग सबसे पहले उसके नैतिक, आदर्शों , मूल्यों सांस्कृतिक धरोहरों का विनाश करता है ,क्योंकि जिस व्यक्ति का नैतिक मूल्यों का पतन होता है ,उस व्यक्ति या देश- काल के लोगों को आसानी से ग़ुलाम बनाया जा सकता है,जिससे शोषक वर्ग आसानी से उसका मानसिक शोषण करता अंग्रेजों ने यही किया यह पीड़ा बहुत महात्मा गांधी को परेशान कर देने वाली पीड़ा थी

त्रिपाठी जी महात्मा गांधी के प्रति समर्पण— गांव की समस्याओं का समाधान भी करने लगे इसे गांधी के प्रति अपना पूरा जीवन समर्पण कर दिया गांधी जी का आंदोलन प्रारंभ हो चुका था इसलिए अपने गांव में सन 1932 में युवक संघ की स्थापना की जिसका सदस्यता शुल्क दो आना था उन्होंने गांधी मेला के नाम से एक अधिवेशन करने का प्रारंभ किया जिसमें बाबा राघव दास उस कार्यक्रम में अध्यक्षता करने वाले थे यह मेला किसी कारण बस न हो सका।

साहित्य समीक्षा — सुधाबिंद त्रिपाठी के कृतियां प्राप्त होती हैं परंतु वह अभी तक प्रकाशित न हो सकी उनके बालक रविंद्र मोहन त्रिपाठी ने उन सभी पांडुलिपियों को एकत्रित करके तीनों रूपों में समाहित किया जिसकी भूमिक वर्तमान में प्रेमचंद साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद पर नियुक्त प्रोफेसर रामदे शुक्ल ने किया, सरस्वती की पूर्ण कृपा इनके ऊपर थी कहा जाए शायद अतिश्योक्ति होगी लेखराज सिंह व रामबहार सिंह के आग्रह पर इन्होंने सात नाटक लिखे। शारदा एक्ट पर कांटे के फूल ,समर्पण ,श्री कृष्ण जन्म, देशभक्त, जीवन -जगत, इन सब पर प्रत्येक दिन मंचन होने लगा तभी से इनका नाम कवि पड़ गया यह मित्रों द्वारा दिया गया नाम है,आगे चलकर इन्होंने कई रचनाओं को रचनाएं लिखा, जो आज अप्रकाशित है, जैसे

आशिया दूर चमन बर्बाद ,ये टूटे हुए बाजू
मेरा क्या हाल हो सय्याद, गर मुझको रिहा कर दे।।

कार्य प्रणाली — इस मानव समाज हर एक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है उसके कार्य करने रहन-सहन अनेक कार्य भी उसके अलग होते हैं हर व्यक्ति के पास कोई ना कोई एक प्रतिभा प्रबल होती है जिससे उसकी पहचान उसकी प्रतिभा से होती है त्रिपाठी जी का कार्य प्राणली एक सामान्य तरीके का था वह सोचते थे लोग समाज को सामंजस के साथ कार्य करें तो हम सभी का जीवन उत्तम प्रकार का होगा तब गांधी जी तथा बाबा राघव दास का सपना पूरा होगा देश कल समाज व्यक्ति खुशहाल होगा आस-पास हरियाली होगा वातावरण हमारा हमारे अनुकूल होगा आपकी कार्य प्रणाली अपनी व्यक्तित्व की एक नैतिक मूल्यों की पहचान होगी तभी नैतिकता निखरती नजर आएगी।

चर्चा –त्रिपाठी जी के विषय में जितना कहा जाए सब एक चर्चा ही होगी चाहे आप क्यों ना लिखित लिखें क्योंकि वह अपने जीवन काल में परिवार या अपने लिए कुछ नहीं किया जीवन में लोगों की सेवा उनका समाधान दूसरों की दुखों से अपना जीवन कमतर दुख लगा जो कभी भी लिपिबद्ध नहीं कर सके पर उनके साथ के सहयोगी दल उनके लिए लिखते हैं शरीर टूट रहा है बिना बुलाए खांसी आती दवा के लिए पैसा नहीं नींद बुलाने पर भी नहीं आती और कभी नहीं आई है सत्यता को उजागिर करने में कितनी कहानियां का निर्माण किया वह भी धूल में मिल गई जो शेष है अधूरी रह गई है पहले छपना सहज जानता था। अब मुश्किल दिखाई देता है, केवल पेंसिल और कागज ही रह गया है, साथ में पहले भूख नहीं लगती थी ।अब क्या होगा क्या हो गया है प्रातः होते-होते भूख लगने लगी है ,सोचता हूं अब शरीर का अंत होने वाला है ।किसकी जमानत पर परिवार के लोगों का भार सौपा ?जाए कोई तो रास्ते पर नहीं दिखाई देता कुछ भी तो सामने नहीं दिखाई देता नहीं, दिखाई देता – परिणाम — त्रिपाठी जी के जीवन काल में अनेकों बार उतार चढ़ाव आए पर अपने पग - पथ से विचलित नहीं हुए जो पथ पकड़ा वह अडीग रहा,अंतिम फैसला भी उनका सामाजिक सेवा ही रहा ।आजादी के बाद भी आंदोलन चलाते रहे, जिसमें आपने अहम भूमिका निभाई जब गुलामी की जंजीरें टूटी तो बहुत सारे भारतवासियों के लिए रोजी-रोटी की समस्या सामने खड़ी थी वह मजदूर मिल मालिकों के खिलाफ कई दिनों तक धरना प्रदर्शन कर अपनी बात पर राजी कराए थे ,यह परिणाम रहा कि सभी की रोजी-रोटी बच गई मजदूर नौकरी पर चले गए।

संदर्भ— इस शोध पत्र में सुधा बिन त्रिपाठी ने महात्मा गांधी व बाबा राघव दास को अपना आदर्श मानकर पत्र पत्रिका में लेखन एवं आंदोलन किया,

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. डॉ रामचंद्र तिवारी हिंदी का गद्य साहित्य का इतिहास काशी विद्यापीठ प्रशासन 2018 पृष्ठ संख्या 223
2. अलका सरावगी , गांधी और सरला देवी चौधरानी बारह अध्याय नई दिल्ली वाणी प्रकाशन
3. मृणाल पांडेय का साहित्य में योगदान पृष्ठ संख्या 5 संजय प्रकाशन नई दिल्ली भारत